



पाठ – आठ

बापू

शृंगार, मानव, नव, आधार, सत्य, अहिंसा, द्वार, स्वतंत्रता,
आराधक, विश्वास, आस्था, साधक, दुखी, दीन, दयनीय, दशा,
आदर्श, चौराह ॥

जब से तुमने छोड़ा संसार
खोया इस जीवन का शृंगार।
तुम हो मानव के नव आधार
सत्य अहिंसा के नए द्वार ॥

हे स्वतंत्रता के आराधक
विश्वास आस्था के साधक
दुखियों के लिए लौट आओ
दीनों की दयनीय दशा देखो ॥

तुम्हारे आदर्शों के हाथ
चौराहों पर कटते दिन - रात।
जब से तुमने छोड़ा संसार
खोया इस जीवन का शृंगार ॥

प्रश्न-अभ्यास

1. नीचे लिखे शब्दों के अर्थोंको समझो :—

शृंगार	=	किसी वस्तु का सजाव, सौन्दर्य बढ़ाने का बनाव-सजाव।
मानव	=	मनुष्य।
नव	=	नया।
आधार	=	सहारा, आश्रय।
सत्य	=	सच्चा।
अहिंसा	=	किसी प्राणी को न मारना, किसी को पीड़ा न देना।
द्वार	=	दरवाजा।
स्वतंत्रता	=	स्वाधीनता, आजादी।
आराधक	=	उपासना करने वाला, पूजा करने वाला।
विश्वास	=	भरोसा।
आस्था	=	भावना पर आधारित विश्वास।
साधक	=	योगी, तपस्वी।
दुखी	=	पीड़ित।
दीन	=	दरिद्र।
दयनीय	=	दया करने योग्य स्थिति।
दशा	=	अवस्था।
आदर्श	=	अनुकरणीय।
चौराहा	=	चार रास्तों का संगम-स्थल, चौक।

2. उत्तर दो :—

- (क) हमारे जीवन का शृंगार कब खो गया ?
- (ख) सत्य और अहिंसा के नव द्वार किसको कहा गया है ?
- (ग) विश्वास और आस्था का साधक कौन है ?
- (घ) किसके आदर्शों के हाथ चौराहों पर कटते हैं ?
- (ङ) गाँधी जी का पूरा नाम क्या है ?
- (च) महात्मा गाँधी को राष्ट्रपिता क्यों कहा जाता है ?
- (छ) एक कागज पर गाँधी जी का चित्र चिपकाकर उनके बारे में पाँच वाक्य लिखो।

3. वाक्य बनाओ

मानव -----

आधार -----

आराधक -----

दयनीय -----

विश्वास -----

सत्य -----

चौराहा -----

आस्था -----

4. पंक्तियाँ पूरी करो :—

हे स्वतन्त्रता के ।

..... के साधक ।

.....

दीनों की दयनीय ॥
